एशिया का विश्व शक्ति के रूप में उदय : चीन और भारत की भूमिका

अमित सिंह* https://doi.org/10.61703/RE-ps-Vyt-710-24-10

संक्षेप

18 वीं सदी तक एशिया आर्थिक रूप से सबसे समृद्ध रहा है, जिसका विश्व सकल घरेलु उत्पाद में लगभग 59 प्रतिशत हिस्सा था। इस काल को 'एशिया शताब्दी' के नाम से भी जाना जाता है। (मैडिसन,2001) लेकिन उन्नीसवीं शताब्दी में एशिया का अधिकांश भाग औपनिवेशिक शासन के अधीन रहा। फलतः बीसवीं सदी में जापान के अतिरिक्त कोई भी ऐसा देश नहीं था जो विश्व में अपनी सामरिक और आर्थिक हैसियत रखता हो । परन्तु आज एशिया फिर विश्व आर्थिक शक्ति के रूप खड़ा हो रहा है। एशिया की अर्थव्यवस्था अगर इसी गति से आगे बढ़ते रहे तो 2050 तक विश्व सकल घरेलु उत्पाद में लगभग 55 प्रतिशत को प्रतिनिधित्व करेगा। इसमें भारत और चीन की भूमिका अहम हैं। दोनो ही देश 2050 तक लगभग 100 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था होगी। (कोहली,2011) अपनी विशाल उत्पादन क्षमता के कारण आज चीन 'वल्ड फेक्ट्री' के रूप में जाना है। यही कारण है कि आज चीन विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। चीन ने बीआरआई के माध्यम से एशिया मे पिछले दस सालों में विभिन्न क्षेत्रों में यूएसडी 530 बिलियन का निवेश किया हैं। (नेडोपील,2014) भारत भी एक्ट ईस्ट पा ॅलिसी के माध्यम से एशिया के आर्थिक विकास में सहायता कर रहा है। ऐसे में अगर भारत और चीन सहअस्तित्व को स्वीकार कर मिलकर एशिया का नेतृत्व करें। तो एशिया का कायाकल्प इस प्रकार परिवर्तित होगा । कि यह 18 सदी के 'एशिया शताब्दी' से भी उन्नत होगा। किन्तु इस मार्ग में भारत और चीन के बीच सबसे बड़ी समस्या सीमा विवाद, नदी जल विवाद, चीन पाक धुरी और अमेरिका द्वारा क्वाड को नेतृत्व आदि उनके बीच दरार ला रहा है। प्रस्तुत शोध पेपर भारत और चीन के बीच सहअस्तित्व की संभावनाओं की तलाश करना हैं। तथा एशिया देशों में उनकी भूमिका का विस्तृत विश्लेषण करना है।

महत्वपुर्ण शब्दावली : अर्थव्यवस्था, एशिया,चीन, भारत, सुरक्षा, सह अस्तित्व, विश्व ।

परिचय

लम्बे समय तक यूरोपीय देशों के उपनिवेश होने के बावजूद आज विश्व की पांच सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में एशिया के दो देश (चीन और भारत) शामिल है, जो एशिया को विश्व शक्ति के रूप में स्थापित करने की क्षमता रखते हैं। आज दोनों ही राष्ट्र विश्व पटल पर एक महत्त्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में उभरे है, जिसके मार्गदर्शन में एशियाई देश अपना विकास सुनिश्चित कर सकता हैं। इन दोनो राष्ट्रों के बीच सहअस्तित्व न केवल एशिया बल्कि विश्व की स्थिरता और समृद्धि के लिए आवश्यक है। ऐतिहासिक दृष्टि से, चीन और भारत के बीच प्रतिस्पर्धा और सहयोग का जटिल समिश्रण रहा हैं। प्राचीन सिल्क रोड ने दोनों देशों के बीच व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत किया हैं। किंतु 1962 में चीन द्वारा भारत पर आक्रमण ने दोनों देशों के बीच दरार ला दी हैं, जिसने 1954 का पंचशील समझौता को धूमिल कर दिया। किंतु दोनों ही देशों ने वैश्विक समस्यायों का जैसे जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद और वैश्विक आर्थिक संकट जैसी चुनौतियों को हल करने के लिए सहअस्तित्व के महत्व को स्वीकार्य किया हैं। आज चीन अपने विशाल विनिर्माण क्षमता

*अतिथि व्याख्याता, शासकीय वी.वाई.टी. पीजी ऑटोनॉमस कॉलेज, दुर्ग, छत्तीसगढ़

और निर्यात के बल पर दुनियां की दूसरी सबसे बडी अर्थव्यवस्था व्यवस्था हैं। वही भारत सेवा, सूचना प्रौद्योगिकी, शिक्षा और कुशल

बौद्धिक जनशक्ति के क्षेत्र में अग्रणी हैं। विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा के बावजूद दोनों देश अपनी क्षमताओ में सामंजस्य स्थापित करके एशिया का नेतृत्व कर सकते हैं। जिस तरह, सहअस्तित्व ने यूरोप को प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका के बावजूद 17 ट्रिलियन की एक सशक्त विश्व शक्ति के रूप में स्थापित किया हैं। इससे सीख लेते हुए अगर भारत और चीन जो कि सम्पूर्ण एशिया सहित ये लगभग 38 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था का प्रतिनिधित्व करते है, भी पूर्ण रूप से सहअस्तित्व को स्वीकार्य कर लें तो विश्व का नेतृत्व एशिया के पास होगा योरोप के पास नही ।

सहयोग के बिन्दू

व्यापारिक सम्बंध

प्रमुख रूप से संतुलित व्यापारिक सम्बंध सहअस्तित्व के निर्माण में अहम मार्ग प्रशस्त करता है। दोनों देशों के मुक्त व्यापार समझौता जैसी पहल कारगर साबित हो सकती है। क्षेत्रीय संपर्क कनेक्टविटी का विस्तार और विकास द्वारा दोनों ही पड़ोसी देश स्वयं तथा अन्य देशों के साथ मिलकर एक नए विश्व व्यवस्था का निर्माण कर सकतें है। इसके लिए चीन ने *बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव प्रोजेक्ट* और भारत की *एक्ट ईस्ट नीति* को उद्देश्य एशिया के बुनियादी ढ़ाचे और संपर्क सूत्र का विकास करना है। भारत चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव प्रोजेक्ट को अपनी सुरक्षा और क्षेत्रिय गतिशीलता के लिए चुनौंती के रूप देखता है, यदि दोनों ही देश एक साथ मिलकर काम करें तो परिणाम इससे बेहतर होगा। बुनियादी ढाँचे के विकास, ऊर्जा सुरक्षा और परिवहन नेटवर्क पर एक साथ काम करके, चीन और भारत आर्थिक विकास और क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा दे सकते हैं। आर्थिक सहयोग के अलावा, चीन और भारत को जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय असंतुलन जैसी प्रमुख चुनौतियों का समाधान भी करना चाहिए। ‘‘दोनों एशियाई महाशक्तियाँ जलवायु परिवर्तन पर एक समान स्थिति साझा करती हैं।‘‘ दोनों ही देश ग्रीनहाउस गैसों के सबसे बड़े उत्सर्जकों में से हैं, और जलवायु परिवर्तन से निपटने के वैश्विक प्रयासों के लिए उनका सहयोग महत्वपूर्ण है। प्रौद्योगिकी, और संसाधनों को साझा करके, चीन और भारत सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण में अग्रणी भूमिका निभा सकते हैं। नवीकरणीय ऊर्जा, जल प्रबंधन और जैव विविधता संरक्षण में सहयोगात्मक पहल न केवल जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम कर सकती है, बल्कि जिम्मेदार शक्तियों के रूप में उनकी वैश्विक स्थिति को भी बढ़ा सकती है। सुरक्षा एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र है जहाँ चीन और भारत के बीच सह-अस्तित्व आवश्यक है। दोनों राष्ट्र आतंकवाद और क्षेत्रीय अस्थिरता सहित आम खतरों का सामना करते हैं। संवाद और खुफिया जानकारी साझा करके, वे अपने सुरक्षा सहयोग को बढ़ा सकते हैं और इन चुनौतियों का अधिक प्रभावी ढंग से समाधान कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, दोनों देश शंघाई सहयोग संगठन जैसे क्षेत्रीय सुरक्षा ढाँचों में प्रमुख खिलाड़ी हैं। इन मंचों के भीतर एक साथ काम करके, चीन और भारत एशिया और उससे आगे शांति और स्थिरता को बढ़ावा दे सकते हैं।

प्रतिस्पर्धी सह-अस्तित्व

चीन के उदय ने अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को मौलिक रूप से बदल दिया है, जिससे भारत की रणनीतिक स्थिति का पुनर्मूल्यांकन आवश्यक हो गया है। *(*डेविड, 2007) भारत और चीन दोनों वैश्विक अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण खिलाड़ी हैं, चीन दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है

और भारत आने वाले वर्षों में सबसे तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था होने का अनुमान है। व्यापार और निवेश सहित उनकी आर्थिक बातचीत क्षेत्रीय स्थिरता और विकास के लिए महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, भारत विनिर्माण और बुनियादी ढांचे में चीनी निवेश चाहता है, जो इसके आर्थिक सुधारों और विकास को बढ़ा सकता है। साथ ही सतत विकास की संभावनाओं का मार्ग सुगम बनाने के लिए दोनो ही देशों ने बहुपक्षीय कूटनीति प्लेटफाॅर्म के महत्व को पहचाना है। वे ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) और एशियाई बुनियादी ढांचा निवेश बैंक (एआईआईबी) जैसे विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगठनों के सक्रिय सदस्य हैं। इन मंचों में उनकी संयुक्त भागीदारी उन्हें विकासशील देशों के हितों की चिंता करने और वकालत करने की अनुमति देती है, जिससे वैश्विक शासन में उनका प्रभाव बढ़ता है। दोनों ही देश एशिया की आत्मा को सुरक्षित रखने के लिए समय-समय अपना दृष्टिकोण एशिया हितों को ध्यान में रख कर किया है। इस कदम ने भारत और चीन के बीच रणनीतिक साझेदारी को एक व्यापक सहयोग की जागृत करने का प्रयास कर रही है, जिसमें राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य और सांस्कृतिक आयाम शामिल हैं। यह साझेदारी एशियाई संतुलन बनाए रखने और जलवायु परिवर्तन और क्षेत्रीय सुरक्षा जैसी आम चुनौतियों का समाधान करने के लिए आवश्यक है। भारत और चीन की प्रतिस्पर्धा छोटे दक्षिण एशियाई देशों को प्रभावित करता है, जो अक्सर अपने आर्थिक लाभों को अधिकतम करने के लिए दोनों दिग्गजों के साथ अपने संबंधों को संतुलित करते हैं। उदाहरण के लिए, कई दक्षिण एशियाई देश भारत के साथ संबंध बनाए रखते हुए चीन की बेल्ट एंड रोड पहल (ठत्प्) में शामिल हुए हैं, जो क्षेत्रीय हितों के जटिल अंतर्संबंध को दर्शाता है। भारत-चीन संबंधों का भविष्य एशिया के भू-राजनीतिक परिदृश्य को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करेगा। जैसे-जैसे दोनों देश अपने ऐतिहासिक विवादों और समकालीन चुनौतियों से निपटेंगे, सहयोग को बढ़ावा देने की उनकी क्षमता एक नई विश्व व्यवस्था को आकार देने में महत्वपूर्ण होगी जो एशियाई देशों की आकांक्षाओं को दर्शाती है। भारत और चीन का सह-अस्तित्व न केवल एक द्विपक्षीय मुद्दा है, बल्कि बहुध्रुवीय दुनिया में प्रभावशाली खिलाड़ियों के रूप में उभर रहे एशियाई देशों के व्यापक संदर्भ में एक महत्वपूर्ण कारक भी है। उनका सहयोग और प्रतिस्पर्धा क्षेत्रीय गतिशीलता और वैश्विक शासन संरचनाओं को आकार देना जारी रखेगी। भारत और चीन के बीच सह-अस्तित्व एकध्रुवीय या द्विध्रवीय नही बल्कि बहुध्रवीयता की विशेषता वाली नई विश्व व्यवस्था में सभी एशियाई देशों को एक प्रभावशाली खिलाड़ी के रूप में उभरने का सबको सामान अवसर प्रदान करता हैं।

आर्थिक अंतरनिर्भरता

भारत और चीन एशिया की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएँ हैं, और उनकी आर्थिक अंतरनिर्भरता उनके द्विपक्षीय संबंधों की आधारशिला है। 2021 तक, चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार था, जिसका द्विपक्षीय व्यापार लगभग 87 बिलियन डॉलर तक पहुँच गया था। यह व्यापार संबंध इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी और फार्मास्यूटिकल्स सहित कई क्षेत्रों को शामिल करता है। दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंध न केवल उनके अपने विकास के लिए बल्कि व्यापक एशियाई अर्थव्यवस्था के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। पिछले चार दशकों में चीन की तीव्र आर्थिक वृद्धि वैश्वीकरण और बहुपक्षीय कूटनीति से प्रेरित रही है, जिससे यह वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में उभर सका है। इसके विपरीत, दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में भारत धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुमानों से संकेत मिलता है कि भारत आने वाले वर्षों में सबसे तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था बनने के लिए तैयार है। यह विकास प्रक्षेपवक्र दोनों देशों के लिए आर्थिक सुधारों, बुनियादी ढांचे के विकास और बाजार तक पहुंच पर सहयोग करने के अवसर का निर्माण करता है। उदाहरण के लिए, भारत विनिर्माण और बुनियादी ढांचे जैसे क्षेत्रों में सक्रिय रूप से चीनी निवेश की तलाश कर रहा है। भारत सरकार ने विदेशी निवेश को आकर्षित करने और घरेलू विनिर्माण क्षमताओं को बढ़ावा देने के लिए ‘‘मेक इन इंडिया‘‘ जैसी पहल शुरू की है, जिसने भारत के विनिर्माण क्षेत्र में यूनिकाॅर्न कम्पनीयों का निर्माण किया है। इन क्षेत्रों में चीनी निवेश भारत को अपने आर्थिक विकास को बढ़ाने और रोजगार पैदा करने में मदद कर सकता है, जिससे क्षेत्रीय स्थिरता में योगदान मिलेगा। हाल के

वर्षों में, भारत और चीन ने आम चुनौतियों का समाधान करने के लिए बहुपक्षीय मामलों में तेजी से सहयोग किया है। उदाहरण के लिए, 2009 में कोपेनहेगन जलवायु परिवर्तन शिखर सम्मेलन और 2015 में पेरिस जलवायु परिवर्तन शिखर सम्मेलन के दौरान, दोनों देशों ने जलवायु परिवर्तन के बारे में विकासशील देशों की चिंताओं के समर्थन में अपनी आवाज उठाई। इन मंचों में उनके संयुक्त प्रयास ऐतिहासिक मतभेदों के बावजूद वैश्विक मुद्दों को संबोधित करने में सहयोग की क्षमता को उजागर करते हैं। इसके अलावा, ब्रिक्स न्यू डेवलपमेंट बैंक की स्थापना एक अधिक समावेशी वैश्विक वित्तीय व्यवस्था महत्वपूर्ण कारक को दर्शाती है। इन संस्थानों का उद्देश्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं मंत बुनियादी ढांचे और सतत विकास परियोजनाओं के लिए धन उपलब्ध कराना है, जिससे एशियाई देशों की आर्थिक संभावनाओं को बढ़ाया जा सके। इन बहुपक्षीय ढाँचों में एक साथ काम करके, भारत और चीन वैश्विक शासन में अपने प्रभाव को मजबूत कर सकते हैं और अधिक न्यायसंगत अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को बढ़ावा दे सकते हैं। ‘‘पिछले चार दशकों में बहुपक्षीय कूटनीति के माध्यम से वैश्वीकरण के लाभों का आनंद कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व वाले चीन ने लिया, जबकि बहुदलीय सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में भारत तुलनात्मक रूप से धीमी गति से आर्थिक विकास को पकड़ रहा है।‘‘ (एस, 2020)

रणनीतिक साझेदारी

भारत और चीन के बीच विकसित हो रही रणनीतिक साझेदारी एशियाई संतुलन बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है। दोनों देशों ने सहकारी प्रयासों के साथ अपने प्रतिस्पर्धी हितों को संतुलित करने का प्रयास कर रहा है।‘‘भारत और चीन दोनों ने प्रतिस्पर्धी सह-अस्तित्व के नए युग में बहुपक्षीय कूटनीति की प्रासंगिकता को स्वीकार किया।‘‘(एस, 2020)इस साझेदारी में राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य और सांस्कृतिक आदान-प्रदान सहित विभिन्न आयाम शामिल हैं। राजनीतिक क्षेत्र में, दोनों देशों के नेताओं के बीच उच्च स्तरीय वार्ता और यात्राओं ने बेहतर समझ और संचार को बढ़ावा दिया है। राष्ट्रवादी आवेगों को प्रबंधित करने और संघर्षों को रोकने के लिए आम जमीन की तलाश करते हुए अपने मतभेदों को स्वीकार करना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, सीमा मुद्दों और सुरक्षा चिंताओं पर संवाद के लिए तंत्र की स्थापना तनाव को कम करने और विश्वास को बढ़ावा देने में मदद कर सकती है। आर्थिक रूप से, सहयोग की संभावना बहुत अधिक है। भारत बुनियादी ढांचे के विकास में चीनी निवेश से लाभान्वित हो सकता है, जो इसके आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। बदले में, चीन भारत के बढ़ते उपभोक्ता बाजार तक पहुंच प्राप्त कर सकता है, जिसके आने वाले वर्षों में काफी बढ़ने की उम्मीद है। यह पारस्परिक लाभ एक अधिक स्थिर और समृद्ध संबंध की ओर ले जा सकता है। सांस्कृतिक रूप से, लोगों से लोगों के बीच आदान-प्रदान, शैक्षिक सहयोग और पर्यटन दोनों देशों के बीच आपसी समझ और सद्भावना को बढ़ा सकते हैं। सांस्कृतिक कूटनीति को बढ़ावा देने वाली पहल ऐतिहासिक विभाजन को भरने और एशियाई देशों के बीच साझा पहचान की भावना को बढ़ावा देने में मदद कर सकती है। है। रणनीतिक साझेदारी का नया युग एशियाई संतुलन और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था को बनाए रखने में महत्वपूर्ण है।(कुमार, 2020)

क्षेत्रीय गतिशीलता

भारत और चीन के प्रतिस्पर्धी सह-अस्तित्व का एशिया के भू-राजनीतिक परिदृश्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। छोटे दक्षिण एशियाई देश अक्सर दोनों ही दिग्गजों के साथ अपने संबंधों को अधिकतम स्तर तक ले जाने में असफल रहते हैं। उनके आर्थिक लाभों की कल्पना करें। उदाहरण के लिए, नेपाल, श्रीलंका और बांग्लादेश जैसे देश भारत के साथ संबंध बनाए रखते हुए चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (ठत्प्) में शामिल हुए हैं। यह गतिशीलता क्षेत्रीय हितों का एक जटिल अंतर्संबंध बनाती है, जहाँ छोटे देश भारत और चीन दोनों के साथ अपने संबंधों को संतुलित करना चाहते हैं। ठत्प्ए जिसका उद्देश्य पूरे एशिया में कनेक्टिविटी और बुनियादी ढाँचे के विकास को बढ़ाना है, इन देशों के लिए निवेश आकर्षित करने के अवसर प्रस्तुत करता है। हालाँकि, यह ऋण निर्भरता और भू-

राजनीतिक प्रभाव के बारे में चिंताएँ भी पैदा करता है। दूसरी ओर, भारत ''एक्ट ईस्ट'' नीति और ''नेबरहुड फर्स्ट'' नीति जैसी पहलों के माध्यम से पड़ोसी देशों के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने में सक्रिय रहा है। आर्थिक सहयोग, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सुरक्षा साझेदारी को बढ़ाकर, भारत का लक्ष्य इस क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करना है। ''इस व्यावहारिक दृष्टिकोण के तहत, भारत-चीन रणनीतिक साझेदारी का मतलब अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखने और उसकी रक्षा करने के लिए पर्याप्त राजनयिक स्थान बनाना है।'' (फ्रैवेल, 2011)

वैश्विक आर्थिक प्रशासन की प्रतिनिधित्व पूर्णता के लिए आवश्यक

भारत और चीन का सह-अस्तित्व न केवल एक द्विपक्षीय मुद्दा है, बल्कि वैश्विक शासन के भविष्य को आकार देने में एक महत्वपूर्ण कारक भी है। जैसे-जैसे दोनों देश अपने ऐतिहासिक विवादों और समकालीन चुनौतियों से निपटेंगे, सहयोग को बढ़ावा देने की उनकी क्षमता भू-राजनीतिक परिदृश्य को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करेगी। शक्ति के एक नए केंद्र के रूप में एशिया का उदय वैश्विक शासन संरचनाओं को नया रूप देने का अवसर प्रस्तुत करता है। वैश्विक दक्षिण के प्रतिनिधियों के रूप में भारत और चीन संयुक्त राष्ट्र, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व व्यापार संगठन जैसी संस्थाओं में सुधार की वकालत कर सकते हैं ताकि उन्हें अधिक प्रतिनिधि और न्यायसंगत बनाया जा सके। इन मंचों पर उनके संयुक्त प्रयास विकासशील देशों की आवाज को बढ़ा सकते हैं और अधिक समावेशी अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को बढ़ावा दे सकते हैं। इसके अलावा, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद और आर्थिक असमानता से उत्पन्न चुनौतियों के लिए सहयोगी समाधानों की आवश्यकता है। वैश्विक क्षेत्र में प्रमुख खिलाड़ियों के रूप में भारत और चीन की इन मुद्दों को हल करने के लिए मिलकर काम करने की जिम्मेदारी है। उनका सहयोग अन्य देशों के लिए एक मिसाल कायम कर सकता है और एक अधिक स्थिर और समृद्ध दुनिया में योगदान दे सकता है। ''साझा चिंता और वैश्विक शासन के कई विकास संबंधी मुद्दे क्षेत्रीय और बहुपक्षीय मंचों पर उनके पारस्परिक लाभ की दिशा में काम करने के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य कर रहे हैं।''

एशियाई आर्थिक विकास के दृष्टिकोण से

भारत और चीन के बीच सह-अस्तित्व एशियाई देशों के आर्थिक विकास के लिए मील का पथ्थर है। दुनिया की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के रूप में, उनके आपसी संबंधों का न केवल उनके अपने विकास पर बल्कि व्यापक एशियाई क्षेत्र पर भी दूरगामी प्रभाव पड़ता है। भारत और चीन को अक्सर एशिया की आर्थिक महाशक्तियाँ कहा जाता है, जिनकी संयुक्त जनसंख्या 2.7 बिलियन से अधिक है। यह जनसांख्यिकीय लाभ एक विशाल उपभोक्ता बाजार में तब्दील हो जाता है, जो दोनों देशों को निवेश और व्यापार के लिए आकर्षक गंतव्य बनाता है। 2024 में, चीन वैश्विक स्तर पर दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी, जबकि भारत पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, अनुमानों से संकेत मिलता है कि भारत आने वाले वर्षों में सबसे तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। इन दोनों देशों की आर्थिक वृद्धि का उनके पड़ोसियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। जैसे-जैसे वे अपनी अर्थव्यवस्थाओं का विस्तार करते जा रहे हैं, वस्तुओं और सेवाओं की मांग बढ़ती जा रही है, जिससे अन्य एशियाई देशों के लिए व्यापार और निवेश में शामिल होने के अवसर पैदा हो रहे हैं। यह परस्पर जुड़ाव एक क्षेत्रीय आर्थिक पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देता है, जहाँ एक राष्ट्र की समृद्धि दूसरों पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। उदाहरण वियतनाम, बांग्लादेश और थाईलैंड जैसे देश भारत और चीन को जोड़ने वाली आपूर्ति श्रृंखलाओं का अभिन्न अंग बन गए हैं। जैसे-जैसे ये देश दोनों दिग्गजों के साथ व्यापार में शामिल होते हैं, वे निवेश आकर्षित करने और अपनी निर्यात क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपनी भौगोलिक निकटता और कम उत्पादन लागत का लाभ उठा सकते हैं। यह गतिशीलता इन देशों में आर्थिक विकास और विकास को बढ़ावा देती है, जो क्षेत्र की समग्र समृद्धि में योगदान देती है। भारत और चीन के बीच निवेश प्रवाह उनके सह-अस्तित्व का एक और महत्वपूर्ण पहलू है जो क्षेत्रीय आर्थिक विकास को प्रभावित

करता है। भारत में चीनी निवेश लगातार बढ़ रहा है, खासकर प्रौद्योगिकी, बुनियादी ढांचे और विनिर्माण जैसे क्षेत्रों में। उदाहरण के लिए, चीनी कंपनियों ने भारतीय स्टार्टअप में निवेश किया है, जिससे प्रौद्योगिकी क्षेत्र के विकास में योगदान मिला है और नवाचार को बढ़ावा मिला है। इसके विपरीत, भारत ने अपने बुनियादी ढांचे के विकास को बढ़ावा देने के लिए चीनी निवेश को आकर्षित करने की भी कोशिश की है। ''मेक इन इंडिया'' जैसी पहल का उद्देश्य चीन सहित विदेशी निवेशों के लिए अनुकूल माहौल बनाना है। बुनियादी ढांचे की परियोजनाओं पर सहयोग करके, दोनों देश कनेक्टिविटी बढ़ा सकते हैं और व्यापार को सुविधाजनक बना सकते हैं, जिससे न केवल उन्हें बल्कि पड़ोसी देशों को भी लाभ होगा। इसके अलावा, चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (ब्च्म्ब्) जैसी पहलों के माध्यम से श्रीलंका और पाकिस्तान जैसे दक्षिण एशियाई देशों में चीनी निवेश की उपस्थिति का क्षेत्रीय विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इन निवेशों से इन देशों में बेहतर बुनियादी ढांचे, रोजगार सृजन और आर्थिक विकास हो सकता है, जिससे उन्हें व्यापक एशियाई आर्थिक परिदृश्य में और अधिक एकीकृत किया जा सकता है।

एशियाई सुरक्षा के दृष्टिकोण से

भारत और चीन के बीच सह-अस्तित्व न केवल एशियाई देशों के आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण कारक है, बल्कि इस क्षेत्र के सुरक्षा परिदृश्य को आकार देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एशिया के दो सबसे बड़े और सबसे प्रभावशाली देशों के रूप में, उनके आपसी संबंधों का क्षेत्रीय स्थिरता, सुरक्षा गतिशीलता और भू-राजनीतिक वातावरण पर गहरा प्रभाव पड़ता है। भारत और चीन के बीच सैन्य प्रतिस्पर्धा उनके सह-अस्तित्व का एक केंद्रीय पहलू है जो एशिया में सुरक्षा वातावरण को प्रभावित करता है। दोनों राष्ट्र अपने सशस्त्र बलों का आधुनिकीकरण और अपनी सैन्य क्षमताओं का विस्तार कर रहे हैं, जिससे क्षेत्र में तनाव और हथियारों की होड़ बढ़ गई है। दोनों देशों के बीच चल रहे सीमा विवाद, विशेष रूप से हिमालयी क्षेत्र में, झड़पों और गतिरोधों के परिणामस्वरूप पड़ोसी देशों में संघर्ष की संभावना के बारे में चिंताएँ बढ़ गई हैं। उदाहरण के लिए, 2020 में भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच गलवान घाटी में हुई झड़प ने विवादित सीमा पर शांति की नाजुकता को उजागर किया। ऐसी घटनाओं से न केवल द्विपक्षीय संबंधों को खतरा होता है, बल्कि पूरे क्षेत्र में इसका असर भी पड़ता है, जिससे पड़ोसी देशों को अपनी सुरक्षा रणनीतियों का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। भूटान, नेपाल और बांग्लादेश जैसे देश, जो भारत और चीन दोनों के साथ सीमा साझा करते हैं, खुद को एक अनिश्चित स्थिति में पाते हैं, उन्हें इन दो दिग्गजों के साथ अपने संबंधों की जटिलताओं को समझने की आवश्यकता है। भारत-चीन संबंधों द्वारा उत्पन्न सुरक्षा चुनौतियों के जवाब में, कई एशियाई देशों ने अपने गठबंधन और सुरक्षा साझेदारी को मजबूत करने की मांग की है। एक सैन्य शक्ति के रूप में चीन के उदय ने भारत को अन्य देशों, विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ अपने रक्षा संबंधों को बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है। चतुर्भुज सुरक्षा वार्ता (क्वाड) द्वारा उदाहरणित इस त्रिपक्षीय सहयोग का उद्देश्य एक स्वतंत्र और खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र को बढ़ावा देना और चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करना है। इसी तरह, वियतनाम और फिलीपींस जैसे दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों ने भी दक्षिण चीन सागर में चीन की मुखरता के जवाब में संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य क्षेत्रीय शक्तियों के साथ अपने सुरक्षा संबंधों को मजबूत करने की कोशिश की है। ये गठबंधन चीन के सैन्य विस्तार के प्रतिकार के रूप में काम करते हैं और क्षेत्र में सामूहिक सुरक्षा के लिए एक रूपरेखा प्रदान करते हैं। छोटे देशों के लिए, भारत और चीन दोनों के साथ अपने संबंधों को संतुलित करने की आवश्यकता सर्वोपरि हो जाती है। श्रीलंका और मालदीव जैसे देशों ने अपनी सुरक्षा और आर्थिक लाभों को अधिकतम करने के लिए दोनों दिग्गजों के साथ रणनीतिक साझेदारी की है। यह संतुलन कार्य संप्रभुता बनाए रखने और यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि वे भारत-चीन तनाव की गोलीबारी में न फंसें।

भारत - चीन सह अस्तित्व की प्रमुख बाधा : सीमा विवाद

सह-अस्तित्व के मार्ग में प्रमुख चुनौतिया है सीमा विवाद, विशेष रूप से हिमालयी क्षेत्र में। यह दोनों ही देशोंं के संबंधों में तनाव का प्रमुख कारण रहा हैं। वास्तविक नियंत्रण रेखा एक फ्लैशपॉइंट बनी हुई है, और सीमा पर सुमदोरोंग चू गतिरोध, नाथू ला और चो ला में सीमा संघर्ष, गलवान और डोकलाम जैसी घटनाएँ तनाव को और बढ़ा रही हैं। वास्तविक नियंत्रण रेखा पर सहमति के अभाव में, सीमा पर घुसपैठ और गतिरोध की नियमित घटनाओं ने द्विपक्षीय संबंधों पर बोझ डाला है। दोनों देशों के लिए इन विवादों को शांतिपूर्ण तरीके से हल करने के लिए रचनात्मक बातचीत में शामिल होना महत्वपूर्ण है। सैन्य संचार और संयुक्त अभ्यास जैसे विश्वास-निर्माण उपाय संघर्ष के जोखिम को कम करने और विश्वास बनाने में मदद कर सकते हैं।

वैश्विक शक्तियों के हित

बाहरी शक्तियों, विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रभाव, चीन और भारत के बीच गतिशीलता को जटिल बनाता है। अमेरिका ने अपनी सैन्य-से-सैन्य साझेदारी को मजबूत करने की कोशिश की है। भारत अपनी हिंद-प्रशांत रणनीति के तहत भारत के साथ सहयोग करता है, जिसका उद्देश्य चीन के उदय को संतुलित करना है। जबकि भारत अमेरिका के साथ अपनी रणनीतिक साझेदारी को महत्व देता है, उसे चीन के साथ शून्य-योग खेल में फंसने से बचने के लिए इस रिश्ते को सावधानी से आगे बढ़ाना चाहिए। एक संतुलित दृष्टिकोण जो दोनों शक्तियों के साथ सह-अस्तित्व और सहयोग को प्राथमिकता देता है, भारत के दीर्घकालिक हितों के लिए आवश्यक होगा।

सम्भावनाएं : सुरक्षा सहयोग और विश्वास-निर्माण उपाय

अपने संबंधों की प्रतिस्पर्धी प्रकृति के बावजूद, भारत और चीन ने क्षेत्र में तनाव को कम करने और स्थिरता बढ़ाने के लिए सुरक्षा सहयोग और विश्वास-निर्माण उपायों में भी भाग लिया है। दोनों देश गलतफहमी को रोकने में संवाद और संचार के महत्व को पहचानते हैं जो संघर्ष में बढ़ सकता है। ''इतिहास से मिले सबक बताते हैं कि भारत को भविष्य के संबंधों को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाने के लिए चीन के साथ अपने पिछले संबंधों से सीखना चाहिए।'' (अरूण, 2008) उदाहरण के लिए, भारत-चीन रणनीतिक आर्थिक वार्ता और सीमा मामलों पर संयुक्त कार्य समूह जैसे विभिन्न द्विपक्षीय तंत्रों की स्थापना का उद्देश्य सुरक्षा संबंधी चिंताओं को दूर करना और आपसी हित के क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देना है। ये वार्ताएँ दोनों देशों को अपनी सुरक्षा चुनौतियों पर चर्चा करने, जानकारी साझा करने और विश्वास बनाने के लिए एक मंच प्रदान करती हैं। इसके अलावा, शंघाई सहयोग संगठन यैब्द्ध जैसे क्षेत्रीय मंच भारत और चीन को आतंकवाद और क्षेत्रीय स्थिरता सहित सुरक्षा मुद्दों पर सहयोग करने के अवसर प्रदान करते हैं। इन बहुपक्षीय मंचों में भाग लेकर, दोनों देश क्षेत्रीय सहयोग की भावना को बढ़ावा देते हुए आम सुरक्षा चुनौतियों का समाधान करने के लिए मिलकर काम कर सकते हैं।

निष्कर्ष

भारत और चीन के बीच तिब्बत एक बफर स्टेट रहा है लेकिन चीन की विस्तारवादी नीति के कारण उसने तिब्बत को हड़प लिया जिसके कारण तिब्बत का नेतृत्व भारत में शरण लेता है, जो कि भारत चीन के बीच धर्मपुर संबंधों का एक महत्वपूर्ण कारक है इसलिए चीन को एक संस्कृतिवादी प्रभुत्ववाद को छोड़कर बहुसंस्कृतिवाद को अपनाना ही पड़ेगा क्योंकि *लगातार वैश्वीकृत हो रही विश्व*

व्यवस्था में, हर राज्य को किसी न किसी तरह से बहुसंस्कृतिवाद को शामिल करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। (हुसैन 2023, पृ 23) बहुसंस्कृतिवाद और बहुलता को मान्यता तथा क्षेत्रीय एवं विश्व राजनीति में क्षेत्रीय स्थिरता व शांति का प्रमुख आधार है, जिसे यदि चीन स्वीकार कर लेता है तो भारत से उसकि गतिरोध समाप्त हो जाएगा और भारत तथा चीन संयुक्त रूप से विश्व राजनीति मै एशिया का नेतृत्व कर सकेंगे ।

पिछले कुछ दशकों में, चीन और भारत की आर्थिक प्रगति ने समस्त पश्चिमी देशों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। यद्यपि इसका लाभ एशियाई देशों को तभी प्राप्त हो सकता है। जब यह दोनों ही देश यूरोपीय यूनियन की तरह सहअस्तित्व को स्वीकार्य करें। भारत और चीन के बीच सह-अस्तित्व सीमा विवादों, रणनीतिक अविश्वास, आर्थिक प्रतिस्पर्धा और भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता से उपजी चुनौतियों से घिरा हुआ है। पिछले कुछ वर्षो में सैनिक झड़पों इस चुनौती को और भी बढ़ा दिया है, जबकि आपसी संदेह, प्रतिस्पर्धी और राष्ट्रीय हित उनके बीच एक सहयोगी वातावरण के निर्माण के प्रयासों को जटिल बनाते हैं। हालांकि, आम चुनौतियों पर रचनात्मक जुड़ाव और सहयोग की आवश्यकता को पहचानना अधिक स्थिर और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। दोनों देशों को कूटनीति और व्यावहारिकता के साथ अपने मतभेदों को दूर करना चाहिए, एक ऐसा माहौल बनाना चाहिए जहां अंतर्निहित तनावों के बावजूद सहयोग पनप सके। ऐसा करके, भारत और चीन क्षेत्रीय स्थिरता और समृद्धि में योगदान दे सकते हैं, जिससे न केवल उन्हें बल्कि व्यापक अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को भी लाभ होगा। साथ ही, व्यापार संबंधों को बढ़ाकर, क्षेत्रीय संपर्क पर सहयोग करके, जलवायु परिवर्तन जैसी साझा चुनौतियों का समाधान करके और सुरक्षा सहयोग को बढ़ावा देकर, चीन और भारत एक अधिक स्थिर और समृद्ध एशिया बना सकते हैं। सह-अस्तित्व के मार्ग पर संवाद, विश्वास-निर्माण और आपसी सम्मान के प्रति प्रतिबद्धता की आवश्यकता होगी। जैसे-जैसे दोनों देश वैश्विक मंच पर आगे बढ़ रहे हैं, शांतिपूर्ण तरीके से सह-अस्तित्व की उनकी क्षमता एशिया और दुनिया के भविष्य को आकार देगी।

संदर्भ

अरुण, एस. (2008). ''क्या हम फिर से खुद को धोखा दे रहे हैं? चीनियों ने पंडित नेहरू को जो सबक सिखाया, लेकिन हम अभी भी उससे सीखने से इनकार करते हैं।'' नई दिल्लीः एएसए प्रकाशन। https://books.google.co.in/books/about/Are_We_Deceiving_Ourselves_Again.html?id=A7REPgAACAAJ&redir_esc=y

डेविड, एस. (2007), ''चीन खड़ा है पीआरसी और अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था।'' न्यूयॉर्क, रूटलेज। https://www.routledge.com/China-Stands-Up-The-PRC-and-the-International-System/Scott/p/book/9780415402705?srsltid=AfmBOopSUPvexapP7nTmD0xAfH531CdGMlRPwJ4yxzilTn4lx1wa9ouh

फ्रैवेल, एम. टी. (2011). ''दक्षिण चीन सागर में चीन की रणनीति'' समकालीन दक्षिण पूर्व एशिया, 33(3), 292-319। https://www.researchgate.net/publication/236779023_China's_Strategy_in_the_South_China_Sea

हुसैन एस एवं सुखदेवे एस. (2023) : *बहुसंस्कृतिवाद और प्रवास: मोदूद का दृष्टिकोण,* रिसर्च एक्सप्रेशन आईएसएसएन 2456-3455 वॉल्यूम VI, अंक 8, मार्च 2023 पृ 23https://doi.org/10.61703/10.61703/vol-6Vyt8_4

कुमार, एस. (2020). ''भारत-चीन प्रतिस्पर्धी सह-अस्तित्वः रणनीतिक साझेदारी का एक नया युग।'' जर्नल ऑफ सोशल एंड पॉलिटिकल साइंसेज, 3(1), 13-22। https://papers.ssrn.com/sol3/papers.cfm?abstract_id=3522414

कोहली,एच. (2011). ''एशिया 2050 एशिया सदी को साकार करना''. एशियन डेवलपमेन्ट बैंक, सिंगापुरhttps://www.researchgate.net/publication/254410752_Asia_2050_Realizing_the_Asian_Century_Overview

मेडिसन, ए. (2011). ''विश्व अर्थव्यवस्था: एक सहस्त्राब्दी परिपेक्ष्य, विकास अध्ययन केन्द्र , ओईसीडी प्रकाशन,पेरिस https://www.oecd.org/en/publications/the-world-economy_9789264189980-en.html